संवाद

पूरे देश में 2 अक्टूबर को गांधी जयंती मनाई गई। इस अवसर पर सभी स्कूलों में कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। गांधी जी का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। लेकिन बहुत कम लोगों को मालूम है कि गांधी जी राजनीतिक और सामाजिक जीवन के अलावा और किस-किस तरह के काम किया करते थे।

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'बहुरूप गांधी' (लेखक-अनु बंद्योपाध्याय) में गांधी जी के जीवन के विभिन्न पहलुओं को 28 अध्यायों में बखूबी उजागर किया गया है। इसकी प्रस्तावना में पंडित जवाहर लाल नेहरू लिखते हैं- यह पुस्तक बच्चों के लिए है लेकिन मुझे यकीन है कि बड़े लोग भी इसे खुशी से पढ़ेंगे और लाभ उठाएँगे। इस पुस्तक में शिक्षक अध्याय के अंतर्गत गांधी जी के शिक्षक रूप की चर्चा है जिसमें गांधी जी के शिक्षा संबंधी प्रयासों के बारे में बताया गया है। गांधी जी किताबें रटवाने के बदले बच्चों के चाल-चलन और मन के विकास पर बहुत ध्यान देते थे। वह चाहते थे कि पढ़ाई बच्चों को बोझ न लगे बल्कि उन्हें आनंद दे। केवल पढ़ने-लिखने और हिसाब लगाना सीख जाने को वह शिक्षा नहीं मानते थे। वह कोशिश किया करते थे कि बच्चे सभी धर्मों का आदर करें। वह सह-शिक्षा के समर्थक थे। गांधी जी चाहते थे कि सभी बच्चों को मातृभाषा में शिक्षा मिले। गांधी जी बच्चों को किसी भी प्रकार का दंड देने के विरोधी थे। एक बार क्रोध में आकर वह एक बच्चे को मार बैठे जिसका उन्हें बाद में बहुत पछतावा हुआ। उस विद्यार्थी को भी मार से उतना दुख नहीं हुआ जितना इस बात से कि उसके कारण बापू को इतना दुख हुआ। उसने गांधी जी से माफी माँगी। दंड देने का गांधी जी के जीवन में यही पहला और अंतिम अवसर था। रस्किन, टॉलस्टॉय तथा रवींद्रनाथ टैगोर के शिक्षा संबंधी विचारों का गांधी जी पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा था।

हम सभी जो कि बच्चों की शिक्षा से सरोकार रखते हैं यदि गांधी जी के विचारों को अपनाएँ तो निश्चित रूप से शिक्षा बच्चों को आनंददायक लगेगी, बोझ नहीं और हर बच्चे का शिक्षा पाने का सपना साकार हो सकेगा।

अकादमिक संपादक